



छठी त्रैवार्षिकी-भारत  
SIXTH TRIENNALE-INDIA 1986

## छठे त्रिनाले का तमाशा

बाईस फरवरी को रबींद्र भवन में छठी त्रैवार्षिकी (अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी-भारत) अभूतपूर्व तनाव और विरोध के आतावरण में शुरू हुई। तीन बजे (उद्घाटन से ढाई घंटे पहले) प्रेस कॉन्फ्रेंस थी जिसमें त्रैवार्षिकी के दस पुरस्कार घोषित किए जाने वाले थे। प्रेस को जो पहला पर्चा मिला वह भारतीय खंड के चयनकर्ताओं (डॉ. सैल चोपल और आरबी शास्त्रण) का विरोध पत्र था। ललित कला अकादेमी के अध्यक्ष प्रोफेसर शंखो चौधरी के नाम लिखे गए इस विरोध पत्र में त्रैवार्षिकी के अवैतनिक निदेशक सुप्रसिद्ध चित्रकार कृष्ण खन्ना पर कई आरोप लगाए गए थे। भारतीय चयनकर्ता (कमिश्नर) उनके द्वारा चुनी गई कृतियों की प्रस्तुति और प्रकाश व्यवस्था से दुखी थे।

पुरस्कार प्रोपित हुए। प्रेस और जूरी के सदस्यों को चार के लिए निर्मात्र किया गया। बकायक कुछ युवा कलाकार चौखटे बिस्तरों पर बसा रहने लगे। उन्होंने अध्यक्ष और निदेशक के विरुद्ध नारा लगाए, गालियां दीं (अमेज़ी में) और कहा कि भारतीय चित्रकारों के साथ धोखा हुआ है।

भारतीय खंड इस बार यदि साधारण और निचली नजर आ रहा है तो उसके लिए प्रस्तुति और प्रकाश व्यवस्था को दोषी ठहराना भी उचित नहीं है। (एके ही जगह पर इतनी बड़ी प्रदर्शनी लगाने के निर्णय ने प्रस्तुति पर स्वाभाविक प्रभाव डाला)। एक नजर में ही पता चल जाता है कि ७५ से भी ऊपर भारतीय कलाकारों को १५० कलाकृतियों काई समग्र प्रभाव नहीं छोड़ पाती है। ऐसे अनेक कलाकार इस प्रदर्शनी में हैं जो जाने-माने चित्रकारों का अनुकरण करके ही संतुष्ट हैं। वे अपने आप से ही संवाल कर कि वे क्या एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी के लायक हैं?

पर इस तरह के दार्शनिक संवाल करवाकर अब नहीं पड़ते। पचास हजार का बड़ा मुखर और अकादेमी का वाद बनाने का तंत्र सज्जनसक संवालों को ज्यादा गुंजाइश नहीं खदे देता।

इस बार की जूरी के सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं: जॉर्ज पवलाविक (युगोस्लाविया) हेविट एलियट

(ब्रिटेन) मोहम्मद मेलाही (मोरको) पियरे गार्दियर (फ्रांस) और सैयद हैदर रजा (भारत)।

इस बार के दस पुरस्कार इस प्रकार हैं: जेनी चाइसन (आस्ट्रेलिया), तुनो रामोस (ब्राजील), पाले नियोलन (डेनमार्क), स्टीफन कौक्स (इंग्लैंड), क्लोड विलो (फ्रांस), कोशी इमिजुका (जापान), एलमाला (भारत), अपर्णा कौर (भारत), इसाबेला गुस्तोवस्का (पोलैंड) और बर्नार्ड मातेमो (जिम्बावे)।

पुरस्कार वितरण समारोह १५ मार्च को होगा। पुरस्कृत विदेशी कलाकारों में से कुछ कलाकार भारत आए हुए हैं। स्टीफन कौक्स ने तो अपने मूर्तिशिल्प महाबलीपुरम से बनाए थे।

ललित कला अकादेमी ने ६५ देशों को त्रैवार्षिकी के लिए निर्मात्र किया था। ५२ ने स्वीकृति भेजी। कुछ देशों में आर्थिक कारणों से त्रैवार्षिकी में हिस्सा नहीं लिया। (मिसाल के लिए मेक्सिको ने भ्रमाल की वजह से हुए जबरदस्त मुकदमों को ध्यान में रखते हुए त्रैवार्षिकी में हिस्सा लेना उचित नहीं समझा)। अल्जीरिया, बंगलादेश,



### इसाबेला गुस्तोवस्का (पोलैंड) की पुरस्कृत कृति

जूरी जित तीन कलाकारों को पुरस्कार देना चाहती थी उन्हें न दे कर दूसरे दो कलाकारों को यह पुरस्कार दिया गया है। जूरी ने प्रभाव से आ कर अपना फैसला बदला है।

जूरी के सदस्य जॉर्ज है कि इस आरोप को बेबुनियाद बना रहे थे। कुछहाल पंद्रह मिनट तक गाली गलती चल रही थी। इस-इस युवा कलाकार समूह का राज था। शाम साढ़े पांच बजे कला प्रेमी केंद्रीय सत्री गुमनिवास मिर्चा ने जून त्रैवार्षिकी का उद्घाटन किया। तो शंखो चौधरी और कृष्ण खन्ना दोनों ही दुखी और क्रुद्ध दिख रहे थे। कृष्ण खन्ना पहले ही कई बार कह चुके हैं कि उन्हें एक साल पहले अचानक ही इस त्रैवार्षिकी के लिए आदेश मिल लिया गया था। कम समय में जो कुछ संभव था वह उन्होंने किया। मैं जानता हूँ कि यह आदर्श त्रैवार्षिकी नहीं है।

तीन बजे के उनाध के बाद शाम को उद्घाटन भले और प्रीतिकर आतावरण में हुआ। जूरी के एक सदस्य पेरिस में बस गए भारतीय चित्रकार सैयद हैदर रजा ने हिंदी में बोलते हुए कहा कि समकालीन भारतीय कला और हिंदी कविता में इस समय बहुत अच्छा काम हो रहा है और युवा कलाकारों को छोटे-छोटे झगड़ों से ऊपर उठ कर इस मौक का फायदा उठाना चाहिए। कुछ सीखना चाहिए।

इस बार भारतीय खंड के लिए ६० चित्रकार और १८ मूर्तिशिल्पी चुने गए थे। भारतीय चयनकर्ताओं ने अपनी रिपोर्ट में इस बात को रेखांकित किया है कि कलाकारों में इस आकृतिमूलक काम के प्रति रुझान बढ़ा है।

जिन भारतीय कलाकारों को निर्मात्र किया गया था, उनमें से दो ने त्रैवार्षिकी में हिस्सा नहीं लिया। ये दो कलाकार हैं—हिमालय शाह और मल्लिक मल्लानी। इस बार अनेक युवा कलाकारों को निर्मात्र किया गया था, इसलिए पुरस्कार बहनों को एक संभावना नजर आ रहा था। उल्लेखनीय है कि इस बार पुरस्कार राशि २० हजार से बढ़ा कर पचास हजार रुपये कर दी गई है। इतनी धनराशि और प्रचार आदि के स्वर्ण अवसर को खो देने का अपराध कुछ कलाकारों को जरूर हुआ होगा। दुनिया भर की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में पुरस्कारों की एजनाति होती है। पर प्रतिष्ठित जूरी के इरादों और काम करने के ढंग पर क्यों संदेह किया जाए? निर्णय अंतिम क्षण तक बदले जाते हैं और बदले जा सकते हैं।

कनाडा, और इराक को काम देर से पहुंचा। इसलिए जूरी पुरस्कार के लिए उन पर विचार नहीं कर पाई।

इससे पहले की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों को हम याद करें तो इस बार अनेक देशों ने निराश किया। खास तौर पर अमेरिका और सोवियत संघ से दोनो बड़े देश लगता है भारतीय त्रैवार्षिकी को। मेला मान कर चले। ब्रिटेन, जापान, आस्ट्रेलिया, पश्चिम जर्मनी, हॉलैंड, पोलैंड सरीखे देश पहले से ही भारतीय प्रदर्शनी में अपेक्षाकृत बेहतर काम भेजते रहे हैं। इस बार जिम्बावे का काम खास तौर से आकर्षित करता है।

संभावित विरोधों ने अपने उद्घाटन समारोह में भारतीय त्रैवार्षिकी को दुनिया के प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय कला आयोजनों में गिनाया। काश कि यह अचूक सच ही होता। त्रैवार्षिकी की प्रतिष्ठा तो भारतीय कलाकारों के बीच भी नहीं है। इस प्रदर्शनी के काम, विभिन्न परिसंवादों और कला मेला आदि की चर्चा हम आगे करेंगे। अखिर ६०-७० लाख के खर्च ने हमें जो कुछ दिया है उससे सीखना जरूरी है। बल्कि उससे न सीखना एक अपराध होगा।

त्रैवार्षिकी अभी २६ मार्च तक खुली रहेगी।



अपर्णा कौर की एक पुरस्कृत पेंटिंग